उड़ीसा की नदी 'महानदी'

डॉ. अर्पिता अग्रवाल

छत्तीसगढ़ की सीमा पार कर महानदी उड़ीसा में प्रवेश करती है। इसकी कुल लम्बाई 858 कि.मी. है जिसमें से लगभग 350 कि.मी छत्तीसगढ़ में और 500 कि.मी. उड़ीसा में है इसीलिए इसे प्रायः उड़ीसा की नदी कहते हैं क्योंकि इसका अधिकांश प्रवाह पथ उड़ीसा में है। महानदी का अर्थ है 'महान नदी'। उड़ीसा राज्य के मध्यवर्ती भाग से होकर बहने वाली विशाल नदी अपने चौड़े पाट और पानी के तेज बहाव के कारण ही महान नदी कहलाती है।

उत्तर भारत की चार बड़ी नदियों के अलावा बहुत सारी छोटी-छोटी नदियाँ प्रवाहित होकर इस क्षेत्र को उपजाऊ बनाती हैं। तीन बड़ी नदियों गंगा, ब्रह्मपुत्र और सिन्धु (जिसकी भारत में कुछ ही सहायक नदियाँ हैं) का उद्गम स्थल हिमालय में है। चौथी बड़ी नदी महानदी का उद्गम विंध्यपर्वत से है। जिस प्रकार हिमालय पर्वत भारत को एशिया के अन्य देशों से अलग करता है, वैसे ही विंध्यपर्वत (भारत के कुलपर्वतों में से एक) दक्षिणापथ को उत्तर से अलग करता है। भारत के बीचों-बीच अथवा कटिप्रदेश में होने के कारण उसे 'विंध्यमेखला' कहते हैं। इसकी श्रृंखला पश्चिम में खंभात की खाड़ी से पूर्व में उड़ीसा तक चली जाती है। विंध्यमेखला के पूर्वी भाग में स्थित अमरकंटक की पहाड़ियों से भारत की चार प्रसिद्ध नदियाँ निकलती हैं जो विभिन्न दिशाओं में बहती हैं। उत्तर दिशा की ओर बहती 'सोन' नदी बुंदेलखण्ड और बिहार का चक्कर लगाकर पटना से पहले गंगा में मिलती है। 'नर्मदा' और ताप्ती' पश्चिम की ओर बहते हुए अरबसागर में अपना जल छोड़ती हैं। महानदी पूर्व दिशा की ओर बहती हुई बंगाल की खाड़ी में विलीन होती है।

कंटकाकीर्ण जंगलों तथा दुर्गम पर्वतों के कारण विंध्य को बीच से पार करना कठिन है परन्तु इसके पश्चिम तथा पूर्वी छोरों से होकर दक्षिण जाने को कतिपय मार्ग हैं जो प्राचीन काल से उपयोग में लाए जाते रहे हैं। ये मार्ग उत्तर तथा दक्षिण के बीच माध्यम का कार्य करते हैं। कहा जाता है कि सर्वप्रथम अगस्त्य मुनि ने विंध्य को पार किया, फिर भृगु आदि ऋषियों ने।

छत्तीसगढ़ में रायपुर जिले के फरेशा ग्राम के नज़दीक एक जलाशय से महानदी निकलती है। 890 मीटर (2,920 फीट) की ऊँचाई से निकली महानदी छत्तीसगढ़ के पूर्वी भाग से बहती है। मध्यप्रदेश के दो भागों में बंट जाने के बाद वर्तमान में यह नदी छत्तीगढ़ से होकर बहती है जबकि पहले वह मध्यप्रदेश से होकर बहती थी। महानदी बहुत सारे पहाड़ी झरनों से मिलकर बनी है इसीलिए जुलाई-अगस्त के वर्षा वाले समय में ब्रह्मपुत्र के बाद सर्वाधिक जलराशि इसी से होकर गुजरती है। मानसून में इस नदी में अक्सर भयानक बाढ़ आ जाती है लेकिन वर्ष के अन्य महीनों में नदी की पतली धारा के दोनों ओर दूर-दूर तक रेत के मैदान दिखाई देते हैं। छत्तीसगढ़ की सीमा पार कर महानदी उड़ीसा में प्रवेश करती है। इसकी कुल लम्बाई 858 कि.मी. है जिसमें से लगभग 350 कि.मी छत्तीसगढ़ में और 500 कि.मी. उड़ीसा में है इसीलिए इसे प्रायः उड़ीसा की नदी कहते हैं क्योंकि इसका अधिकांश प्रवाह पथ उड़ीसा में है। महानदी का अर्थ है 'महान नदी'। उड़ीसा राज्य के मध्यवर्ती भाग से होकर बहने वाली विशाल नदी अपने चौड़े पाट और पानी के तेज बहाव के कारण ही महान नदी कहलाती है।

छत्तीसगढ़ में बिलासपुर में शिवरी नारायण से 13 कि.मी. पहले एक मुख्य सहायिका शिवनाथ (सियोनाथ) महानदी में मिलती है। इसके बाद छत्तीसगढ़ के छोटानागपुर से गुजरती महानदी सुन्दर पहाड़ी इलाके से गुजरती है, जहाँ अन्य सहायक नदियाँ इसमें मिलकर इसकी पानी की मात्रा बढ़ा देती हैं। जंगली चट्टानों से भरी सीमाओं से होकर बहने वाली महानदी उड़ीसा में प्रवेश करती है। यहां सम्बलपुर में इतिहास प्रसिद्ध अनेक दर्शनीय स्थल हैं। यह स्थल हरे-भरे जंगलों, रंगीन वन्य जीवन, झरनों, आदिवासी सभ्यता, त्योहारों, उत्सवों, स्मारकों, लोक-संगीत व लोक नृत्य के लिए जाना जाता है। सम्बल पुर का वर्णन दूसरी शताब्दी की लिखी 'टोलोमी' की पुस्तक में भी मिलता है। सम्बलपुर के नज़दीक कई पर्यटन स्थल हैं जहां स्थित वन्य अभ्यारण्य,

झरनों, मंदिरों को देखने पर्यटक आते हैं। यहां पास में ही गंधमार्दन पर्वत है जिसे जनश्रुति के अनुसार लक्ष्मण जी की प्राण रक्षा के लिए हिमालय पर संजीवनी बूटी लाने गए महाबली हनुमान वहां से जब पर्वत उठा कर ला रहे थे तो उस का एक टुकड़ा यहां गिरा था और गंधमार्दन कहलाया था। इस पर्वत पर औषधीय पौधे पाए जाते हैं। नैसर्गिक सुंदरता से भरपूर इस स्थल से थोड़ी दूरी पर सुप्रसिद्ध 'हीराकुंड बाँध' है। हीराकुंड नामक स्थान पर बने बाँध का नाम 'हीराकुंड बाँध' रखा गया है। यहां नज़दीक ही स्थित एक गुफ़ा में लगभग साढ़े तीन हजार वर्ष पुराने भित्तिचित्र है। हीराकुंड बाँध किसी एक नदी पर बना हुआ अपने समय का संसार का सबसे लंबा बांध है। इस बांध से विशाल जलाशय का निर्माण हुआ। जिसमें संचित जलराशि से महानदी के प्रवाह क्षेत्र में प्रतिवर्ष आने वाली बाढ़ का भय समाप्त हो गया, साथ ही सूखे मौसम में कृषि के लिए सिंचाई जल भी सर्वोत्तम मात्रा में उपलब्ध होने लगा। यहां से महानदी दक्षिण दिशा में प्रवाहित होती है। इससे आगे 'आंग' नदी का जल लेती महानदी दक्षिण पूर्वी दिशा में बहती है। इसके बाद 'तेल' नदी का जलग्रहण करके पूर्वीघाट के इलाके में प्रवेश करती है। यहां से आगे सतकोसिया नामक गहरी घाटी से गुजरती महानदी प्रवाह पथ में आगे बढ़ती हुई कैमुंडी घाटी से होकर बहती है। महानदी का मार्ग विभिन्न प्रकार की पहाड़ियों व चट्टानों से होकर गुज़रता है। कठिन रास्ता बनाती सुन्दर घाटियों से गुजरती महानदी के किनारों की ढालों पर घने जंगल हैं। महानदी की संकरी घाटियां बहुत सुन्दर होती है। इन नम घाटियों में बाँस के सुन्दर-सुन्दर वन हैं जिनसे कागज़ के लिए कच्चा माल मिलता है। नदी में पायी जाने वाली मछलियों से आस-पास रहने वाले लोग आजीविका चलाते हैं। यहां मगरमच्छ भी पाए जाते हैं। यह घाटियां किसी समय मूल्यवान चमड़े के कारण मगर के शिकार के लिए प्रसिद्ध थी लेकिन अब शिकार प्रतिबंधित है।

निरन्तर पूर्व की ओर बहती महानदी तलचर के कोयले की खान वाले क्षेत्र से भी होकर गुजरती है। बहुत पहले किसी समय यह सारा क्षेत्र जंगलों से भरा था जोकि कालान्तर में भूमि में समाकर कोयला बन गया। 'नेराज' नामक स्थान से महानदी उड़ीसा के मैदानों में प्रवेश करती है और साथ ही डेल्टा बनाना आरम्भ कर देती है। यहां से सात मील दूर स्थित 'कटक' शहर में प्रवेश से पहले इसकी एक शाखा 'कथजोरी (काटजुरी) निकलती है। 'कटक' का अर्थ है 'किला'। यह नगर महानदी के एक दीप की तरह है जिसकी तीन भुजाएं हैं। इसी कारण पुराने जमाने में संकट के समय इसकी रक्षा करने में आसानी होती थी। कटक महानदी और कथजोरी के उपजाऊ डेल्टा पर स्थित है। यहां चावल बहुतायत में उगाया जाता है। कटक में चाँदी के तारों से बर्तनों व आभूषणों की सजावट की जाती है। इस कार्य के लिए इसकी ख्याति अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फैली है। कटक उड़ीसा के सबसे पुराने शहरों में से एक है। यहां सैंकड़ों वर्ष पुराने कई दर्शनीय स्थल हैं। चंडी मंदिर और भगवान शिव का मंदिर बहुत प्रसिद्ध हैं। दुर्गा पूजा यहां का मुख्य त्योहार है। कटक प्राचीन काल से ही व्यापार का प्रमुख केन्द्र रहा है। यह वस्त्र उद्योग के लिए साड़ियों के डिज़ाइन के लिए प्रसिद्ध है। कथजोरी से पुनः कई शाखाएँ निकलती है। महानदी से भी कई सहायक नदियाँ निकलती हैं और डेल्टा का निर्माण होता है। यह सभी नदियाँ समुद्र तट के पास अनेकों मुहाने बनाते हुए समुद्र में समा जाती हैं। महानदी की मुख्य धारा 'फाल्सप्वाइंट' के पास बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। इस संगम पर खूबसूरत समुद्र तट, समुद्र का नीला पानी और हरे-भरे जंगल मन को मोह लेते हैं। यह

संसार के किसी भी सुन्दर स्थल से उड़ीसा की तुलना की जा सकती है। यहां 400 कि.मी. लम्बा समुद्र तट है। अनेक नदियों के मुहाने हैं और खनिज पदार्थों की अकूत सम्पदा है। लेकिन उड़ीसा में बाढ़ और समुद्री तूफान महाविनाश लाते हैं। पुरातन काल से ही यह नगरी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जानी जाती है।

उड़ीसा में स्थित महानदी का दृश्य

हीराकुड़ नामक स्थान पर बने बाँध का नाम हीराकुंड बाँध रखा गया

स्थान जंगलों से घिरा है। यहीं पास में 'पाराद्वीप' नामक स्थान पर एक बन्दरगाह बनाया गया है जो भारत के पूर्वी तट के सबसे बड़े बन्दरगाह में से एक है। यहीं समुद्र तट के पास में केन्द्रपाड़ा नामक स्थान पर एक प्रसिद्ध भ्रमण स्थल है जहां सन् 1975 में भितरकनिका वन्य अभ्यारण्य स्थापित हुआ था। इसी के अन्दर भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान है जहां मैनग्रोव' वृक्ष पाए जाते हैं। यहां मगरमच्छों का प्रजनन केन्द्र भी है। केन्द्रपाड़ा में ही महानदी के मुहाने के पास तक फैला 'गहिरमाथा समुद्री अभ्यारण्य' है, जो सन् 1997 में स्थापित हुआ। यह अभ्यारण्य उत्तर में घुमरा नदी के मुहाने से दक्षिण में महानदी के मुहाने तक 35 कि.मी. में फैला है। भितरकनिका और महानदी के डेल्टा में उगने वाले मैनग्रोव का फायदा गहिरमाथा को मिलता है जिस वजह से इस अभ्यारण्य का तटीय हिस्सा दुनिया में मछलियों के एक बड़े केन्द्र के रूप में माना जाता है। यहां पर्याप्त मात्रा में भोजन मिलने की वजह से कछुए भी आकर्षित होते हैं। यहां लाखों की संख्या में प्रतिवर्ष जनवरी से मई माह के बीच दुर्लभ ओलिवरिडले कछुए अंडे देने के लिए आते हैं।

महानदी का डेल्टा भारत के बड़े डेल्टाओं में से एक है। महानदी घाटी उपजाऊ मिट्टी और भरपूर खेती के लिए प्रसिद्ध है। महानदी चौड़े पाट की रेतीले तट वाली नदी है। इन नदियों का अपना ही सौंदर्य होता है। महानदी धीरे-धीरे बहने के कारण भारी मात्रा में तलछट लाती है और समुद्र में छोड़ती है लेकिन हीराकुंड बाँध बनने से नदी में तलछट की मात्रा काफी कम हो गयी है क्योंकि बाँध में ही तलछट रूक जाती है। बाँध बनने से महानदी की जलसंपदा का उपयोग सिंचाई और जल विद्युत उत्पादन में हुआ है। पहले यह संपदा सागर में बहकर बेकार हो जाती थी। एक तरफ तो वर्षा के मौसम में महानदी की विशाल जलराशि समुद्र में व्यर्थ बहकर बर्बाद होती थी तो गर्मियों में पानी की कमी और लू उपज चौपट कर देती थीं महानदी पर विभिन्न बैराजों का निर्माण करके नहरें निकाली गयी हैं। इनसे विशाल भूमि की सिंचाई होती है। महानदी से निकली सहायक नदियों पर बसे अनेक स्थल प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर हैं। महानदी के साथ उड़ीसा की अन्य नदियों की घाटियाँ मिलकर भारत का बहुत उपजाऊ क्षेत्र बनाती हैं।

संसार के किसी भी सुन्दर स्थल से उड़ीसा की तुलना की जा सकती है। यहां 400 कि.मी. लम्बा समुद्र तट है। अनेक नदियों के मुहाने हैं और खनिज पदार्थों की अकूत सम्पदा है। लेकिन उड़ीसा में बाढ़ और समुद्री तूफान महाविनाश लाते हैं। पुरातन काल से ही यह नगरी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जानी जाती है।

प्राचीनकाल से ही महानदी में नौकाएं चलती थी। नाविक बालू के स्थान पर नावों को हाथ से खींचते थे क्योंकि नदी के प्रवाह के बीच में अनेक बालू के ढेर मिलते थे लेकिन हीराकुंड बाँध बनने से और उसके बाद विभिन्न बैराजों के बनने से नदी में नौका चालन नहीं होता। अब सिर्फ हीराकुंड जलाशय और डेल्टा क्षेत्र में नौका चालन होता है। जो महत्व गंगा का उत्तर भारत के लिए है वही महानदी का उड़ीसा के लिए है। महानदी में एक समय इतना स्वच्छ जल था कि शहरों, कस्बों में पीने के और सिंचाई के लिए महानदी जल का मुख्य स्रोत थी। आज इस नदी के जल को पीने के लिए अयोग्य घोषित कर दिया गया है। नदी में प्रदूषण बहुत बढ़ गया है जिसके कई कारण हैं। त्योहारों पर सैकड़ों मूर्तियाँ नदी में विसर्जित की जाती हैं। फैक्ट्रियों से निकला ज़हरीला पानी सीधा नदी में डाल दिया जाता है। कूड़ा करकट नदी के किनारे फेंक दिया जाता है जो धीरे-धीरे नदी में बह जाता है। शहरी सीवेज, शहरी गंदगी और अन्य स्रोतों से निकला गंदा पानी बिना उपचारित किए सीधा नदी में डाल दिया जाता है। बिजली घरों से निकली राख भी नदी किनारे डाल दी जाती है। टूटी इमारतों का मलबा भी नदी किनारे फेंक दिया जाता है। इस तरह अनेकों कारणों से नदी प्रदूषित होती जा रही है। विद्युत गृहों से निकला गरम पानी सीधा नदियों में बहाने से नदियों का पारिस्थितिकी तंत्र बिगड़ जाता है और जलचरों का जीवन संकट में पड़ जाता है। महानदी के साथ-साथ उड़ीसा की अन्य नदियाँ जैसे ब्रह्मणी, वैतरणी आदि भी प्रदूषित हो चुकी हैं। इन सब नदियों का जल पेट व त्वचा की गंभीर बीमारियाँ पैदा कर देता है।

प्रकृति धरती की उथली-पुथली परतों की साफ-सफाई नदियों के माध्यम से करती है। नदियाँ निरन्तर प्रवाहित होकर पानी की अशुद्धियों जैसे फ्लोराइड, आर्सेनिक आदि को दूर कर पानी को साफ करती हैं लेकिन हमने नदियों में करोड़ों लीटर प्रदूषित कचरा प्रतिदिन के हिसाब से बहाया इससे नदियों का अपनी सफाई खुद करने का तंत्र गड़बड़ा गया, और पानी पिलाने वाली नदियाँ इतनी ज़हरीली हो गई कि उनसे सिंचित खेतों में उगी सब्जियाँ भी ज़हरीले रसायनों से युक्त हो गयी। प्रकृति का अनादर कर मानव स्वयं कब तक स्वस्थ रह पाएगा यह चिंतन का विषय है। मोक्ष प्रदायिनी नदियाँ स्वयं मृत्यु के कगार पर हैं। अब समय आ गया है कि हम अपनी नदियों को पुनर्जीवित करें और प्रकृति के साथ जिएं।

महानदी का जल प्रदूषित होने के कारण पीने के योग्य नहीं रहा

पाराद्वीप नामक स्थान पर पूर्वी तट पर बना पाराद्वीप पोर्ट

संपर्क करें:
डॉ. अर्पिता अग्रवाल
120-बी/2, साकेत, मेरठ-250 003
(उत्तर प्रदेश)
ईमेलः fca.arpita@yahoo.com